कुमर-हरन नाट

किछु प्रमुख अंशक उद्धरण

पयार ।

बानराजा बोल—त्राहि त्राहि त्रिपुरारि करो नमस्कार ।
तोमार चरने सदा शिर आमार ॥
एतकाल प्रभु मोहे न पाइलो समर ।
किवा करि आछे मोर हाजारेक कर ॥
कोन दिना युद्ध पाइबो ताक कहियोक ।
आछोक पुरुषे मोक हासे नारी लोक ॥
शुभि लम पुरुष आसोक मोक धारे ।
तबे हाजारेक कर सान्धल आमारे ॥

कथा—हे प्रभु सदाशिव तोहो परम ईश्वर । सुत देन आनि हामाक ओहि अनुग्रह करह ।

सूत्र०—बानराजाक ऐचन बानी शुनि हरे कोपे कम्पमान हुया ये बोलल ।

महेश बोल—ऐबे बान, तोहो हामाक आगु ऐचन गर्ब्ब करह । येखने तोहार भाण्डारर मकरध्वज भागय तबे मई सम पुरुष सहिते युद्ध पाओबि । सोहि समरे हाजारेक कर छेद करब । ईहा जानि आपोनाक सत्वरे साजु हव । हामु निष्ठे कहलो ।

सूत्र०—ओहि बोलि हरगौरी अन्तर्धान भेल । बानराजा पुनु आसने बैथि रहल ।

[अङ्कमाला—डा० सत्येन्द्रनाथ शर्मा, पृष्ठ १४१]

× × × ×

सूत्र०—बानक बाहुछेद देखिये हर जाज्वल्य समान कोपे हाते त्रिशूल धरि खेदि आदि कृष्णक बोलल ।

शङ्कर बोल—हे कृष्ण, हामार भक्त बानराजा ताहेक तोहो बाहुछेद कयलि, तोहाक हम चारब नाहि ।

[ऐजन—पृ० १६६]

× × × ×

भटिमा

जय जय कृष्ण हर त्रिनयन ।
तव पद कमले पशिलो शरण ॥
किरीटि कुण्डल धर श्यामल काय ।
नागशेखर चन्द्र ललाटे सुहाय ॥
कौस्तुभ कण्ठे वनमाली धारी ।
गले गरल धर त्रिपुरान्तकारी ॥
पीताम्बर धर शङ्ख-चक्रपानि ।
त्रिशूल डम्बरुधर शिव महाज्ञानी ॥
लक्ष्मी, सरस्वती या करु सेवा ।
पार्ब्वती-वल्लभ चर्म्माम्बर देवा ॥

[ऐजन पृ० १६६]

× × × ×

प्रलय पयोधि जले वेद उद्धारि ।
× × ×
पूर्ण ब्रह्म भेला देवकी नन्दने ॥

[ऐजन पृ० १७१]

द्रष्टव्य—अ० ना० वि०

—:*:—

शतस्कन्ध रावण-वध

किछु प्रमुख अंशक उद्धरण

ससैन्ये सहित वीरे रामक वधिला
हनुमन्ते ऐहि वार्त्ता सीताक जनाइला ।
शुनि देवि कालीरूप तेतिक्षणे धरि
शतस्कन्ध राक्षसक ससैन्ये संहरि ।।
रामर देखिया मृत्यु शोकाविष्टे भैला
अमृत नयने चाहि तेखने जीआईला ।
ससैन्ये सहिते राम अयोध्याक आईला
लक्ष्मण सहिते निज थाने रैला ।।

[अङ्कमाला—शतस्कन्ध रावणवध, पृ० १७७]

× × ×

सीतार वाक्ये हनुमन्ते माथा पाति गोसानीक लेया चलल । कतोक्षणे यहीं सिंहल भुवने उपस्थित भैल । स्वामी देवरक मृतकप्राय देखि क्रोधे देवी भयङ्कर मूर्त्ति धरल—

स्वर्गत लागिल शिर भयङ्कर भैला
लह-लह जिभाखान आकाश भेदिला ।।

ओहि प्रकारे सीता श्यामारूप धरि शतस्कन्ध द्वारे उपगत भैल । से देवीर तेजे सिंहल भुवन पुरि छाई भैल । देखि महाकोपे शतस्कन्धे ताहान पुत्रक चाहि बोलल ।

शतस्कन्ध बोल—ऐसे पुत्र अर्द्ध शत तोहो सीताक मारह ।

सूत्र०—हचार बानी शुनि अर्धशते खान्ता धरि गोसानीक धावल । देखि गोसानी ताहाक मारल । पुनः प्रभा नामे राक्षसवीरे खेदि आसल ।

प्रभा बोल—ऐसे अधम स्त्री जाति, तोहो हामाक संगे यूँ जिते चाह, आजु गदार प्रहारे तोक यमपुर देखाउँ । हामार पराक्रम बूझह ।

सूत्र०—ओहि बूलि प्रभा युद्ध करल । युद्धत प्रभा वीरक ससैन्ये नाश करल । ताहे पेखि शतस्कन्ध महाक्रोधे हाते धनुर्व्वाण धरि युद्ध करिवाक सम्मुख भैल देवीक चाहि बोलल ।

शतस्कन्ध बोल—ऐसे दुराचारी, तोहो आजु मरिते आयलि, हामार ओहि गदा मुद्गरर प्रहारे तोहाक यमपुर पठाईबो । तैबे हामाक शतस्कन्ध राजा बुलि जानबि । आजु मोर पराक्रम देख ।

गीत

एहि बुलि देला वीर गदार सन्धान
खड्गे चोटे गदाक करिला खान-खान ।
पुनु महाकोपे राजा हानिलेक शूल
देवीर गावत परि भैलेक निर्म्मूल ।
हेन देखि देवी पाछे महाक्रोधे करि
काटिला शतस्कन्धक हाते खड्ग धरि ।
शतश्रृङ्ग पर्व्वत खसिला येन मत
बोला राम-राम चेतन थावत ।

सूत्र०—ऐसन युद्धे शतस्कन्धक माथा काटि भूमित पारल । तार भरे खलक लागिल । राक्षस वधिये देवी दशन प्रकटि रि पारि फुरय । समस्ते जगते घोर प्रलय मिले हेन देखि ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि देवता देवतागण शान्त करिवाक मने आसल, ता देखह शुनह निरन्तरे हरि बोल हरि ।

[ऐजन पृ० १६८—१६९]

—:०:—